संदेश-पत्र

प्रिय सोहन,
प्रेम।

धूप घनी हो गयी है और मैं एक वृक्ष की छाया में बैठा हूं। मैं अकेला हूं और आकाश में उड़ते बादलों को देख रहा हूं।
बादलों की भांति ही बेजड़, विचार होते हैं।
और, जैसे बादल आकाश को घेर लेते हैं, ऐसे ही विचार आत्मा को।
बादलों के हटते ही आकाश के दर्शन होते हैं।
और, विचारों के हटते ही आत्मा के।
और, विचारशून्य हो, स्वयं को जानना ही आनंद है।
जब कोई इस भांति स्वयं में स्थित होता है, तभी आनंद को उपलब्ध हो जाता है।
जिन्हें आनंद खोजना हो, उन्हें निर्विचार को खोजना होता है।
माणिक बाबू को प्रेम। बच्चों को आशीष। जल्दी ही तुझसे मिलने की आशा में

– ***ओशो***

प्रेम की झील में अनुग्रह के फूल

संपादकीय

समुंद समाना बुंद में

एक प्रवचन में अपने कार्य के संबंध में बोलते हुए ओशो कहते हैं : कार्य सदा सागर जितना है और जो हम कर पाते हैं, वह चम्मच जैसा है। इसलिए मैं जल्दी में हूं और चाहता हूं कि तुम्हें भी इस जल्दी का अहसास हो।

यह प्रवचन बंबई में हुआ था—शायद 1970 का वर्ष था। एक वर्ष बाद, 1971 में मेरा बंबई जाना हुआ और बंबई के ही एक अपार्टमेंट में, वुड्लैंड्स में, संन्यास-दीक्षा घटित हुई। उसके बाद मेरा अनेक बार बंबई जाना हुआ—ऐसे ही जैसे कोई तीर्थयात्रा पर जाता है। जहां आप बुद्ध से मिले, जहां दीक्षा घटित हुई, वह स्थान आपके लिए तीर्थस्थान हो जाता है, क्योंकि जीवन में इससे बड़ी कोई और घटना नहीं हो सकती। बुद्ध से मिलना, उनका स्पर्श पाना, उनके सान्निध्य में होना ऐसी घटना है जिसकी कोई तुलना नहीं है।

इसलिए बंबई इसी भाव से जाना होता है और साथ ही ओशो का यह वाक्य भी स्मरण में आता है कि कार्य सदा सागर जितना है और जो हम कर पाते हैं वह चम्मच भर से ज्यादा नहीं। इस बार भी वर्ष के प्रारंभ में, 19 जनवरी को, ओशो की पुण्यतिथि के अवसर पर, फिर ठीक दो महीने बाद मार्च में, ओशो के संबोधि महोत्सव के अवसर पर बंबई जाना हुआ। बंबई-पुणे के मध्य पनवेल के ऋषि गार्डन रिसोर्ट में तीन दिवसीय ध्यान शिविर था जहां करीब 200 मित्र आए थे। बंबई की कितनी अपार जनसंख्या है! स्वयं ओशो इस महानगर में कितने वर्षों तक भौतिक रूप में भी उपस्थित रहे। कितने हज़ारों लोग उनके निकट आए, रूपांतरित हुए। लेकिन बंबई के अपार जनसमूह को देखकर लगता है कि कार्य चम्मच भर भी नहीं हुआ। कितना विशाल कार्य है जो अभी होना है। और बंबई तो पूना से कितना निकट भी हैं—पूना जहां कितने वर्षों से दुनिया भर से ओशो के हज़ारों-लाखों शिष्य व प्रेमी वहां आते रहे हैं। ऐसी समीपता का लाभ बंबई को भी अवश्य मिलना चाहिए। बंबई में जगह-जगह ध्यान-केन्द्र खुलें; दिल्ली में जैसे ओशो वर्ल्ड गैलेरिया अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोगों को आकर्षित करता है, ऐसा कोई आउटलेट वहां भी हो। बंबई पूरे देश की भौतिक स्मृद्धि की राजधानी समझी जाती है, धन-संपदा की वहां कोई कमी नहीं। लेकिन धन-संपदा के साथ बहुत उत्साह और अदम्य साहस भी बहुत जरूरी होते हैं। कुछ मित्र ऐसी ऊर्जा जुटा लें तो सब संभव है।

कोई मित्र मुझसे पूछ रहा था कि आप ओशो के कार्य के लिए बंबई आएंगे? मैंने कहा कि जहां भी ओशो के कार्य में कुछ संभावना हो मैं वहां आनंद से आऊंगा—दुनिया के किसी भी कोने में। अपना तो बस यही आनंद है।

बंबई में था तो पुणे से स्वामी आनंद संत ने भी संदेश भेजा—यहां एक दिन के लिए सद्गुरु की नगरी में आ जाओ। ऐसा संदेश सुनना कितना मनभावन है! वह दुनिया बहुत रूखी-सूखी रसहीन हो जाएगी जब उसमें कोई ऐसी भाषा बोलने वाला न होगा कि—सद्गुरु की नगरी में आ जाओ!

पनवेल के बाद मैं पुणे गया और वहां मुझे संत महाराज सड़कों पर ओशो के प्रेमी शिष्यों की ओर इंगित करके कहें कि देखो कितने प्यारे लोग हैं ये, इतने वर्षों के बाद भी ये जैसे-तैसे गुरु की नगरी में टिके हुए हैं। इस समय प्रदूषण में पूना विश्व के शहरों में पांचवें नंबर पर गिना जा रहा है, और भी संघर्ष है, लेकिन कैसे भी व्यवस्था जुटा कर कुछ लोग वर्षों से यहां टिक गए हैं। धन्य है सद्गुरु की नगरी। तुम भी बार-बार यहां आया करो!

निश्चित ही!

पुणे निश्चित ही सद्गुरु की नगरी है लेकिन जहां भी ओशो के कुछ प्रेमी मिलकर ध्यान क्षेत्र निर्मित कर लेते हैं वहां सद्गुरु की नगरी बस जाती है। अनेकानेक नगरों में, उपनगरों में, गांवों में, पर्वतों-घाटियों में, ऐसी छोटी-छोटी नगरियां बस रही हैं, बसती रहेंगी। कार्य भले ही हम चम्मच भर कर पाएं—उतना ही कर पाते हैं—लेकिन उत्साह सागर से कम न हो! तभी तो यह घटना घटेगी—समुंद समाना बुंद में।

— *स्वामी चैतन्य कीर्ति*